Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

अरावली पर्वत श्रृखंला : उदयपुर जिले के संदर्भ में

डॉ. वर्षा चुण्डावत*

* सहायक आचार्य (भूगोल) राजकीय महाविद्यालय,जैतारण,ब्यावर (राज.) भारत

प्रस्तावना – राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित उदयपुर जिला मुख्यालय स्वतंत्रता से पूर्व मेवाड़ राज्य की राजधानी था। प्राकृतिक दृष्टिकोण से सुन्दर इस नगर को 1559ई.में मेवाड़ महाराणा उदय सिंह ने बसाया था।[1] राज्य के दक्षिणांचल में स्थित उदयपुर जिले का विस्तार 23°46' से 26° 20' उत्तरी अक्षांश एवं 73°00' से 74°35' पूर्वी देशांतर के मध्य रहा हैं।[2] उदयपुर जिले की समुद्रतल से ऊँचाई 577 मीटर है। 10 अप्रैल 1991 को दौसा, राजसमंद और बारां नामक जिले बनाये गये।[3] उदयपुर जिले के ही भाग राजसमन्द क्षेत्र को राजसमन्द जिले के रूप में गठित करने के बाद उदयपुर जिले का विस्तार 23°46' उत्तरी अंक्षाश से 25°52 उत्तरी अंक्षाश तक तथा 73°92 पूर्वी देशान्तर से 74°35' पूर्वी देशान्तर के मध्य रहा है।[4] राजस्थान के वर्ष 2007–08 के बजट में प्रतापगढ़ को नया जिला बनाने की घोषणा की गयी। 27 जनवरी 2008 को इस नये जिले के अस्तित्व में आ जाने से राज्य में जिलों की संख्या 33 हो गयी है। इस प्रकार वर्तमान में राजस्थान में कुल 33 जिले हैं जो सात संभागों में विभक्त हैं। उदयपुर के पूर्व में चित्तौड़गढ़ जिला, उत्तर में राजसमन्द, उत्तर–पश्चिम में पाली, पश्चिम में सिरोही, पश्चिम दक्षिण में गुजरात राज्य की सीमा, दक्षिण में डूंगरपुर तथा दक्षिण–पूर्वी भाग में बांसवाड़ा जिला है।[5]

अरावली पर्वत श्रृखंला के सन्दर्भ में ज्ञात हैं किरूपजीके निकट का पर्वत देश अर्थात् मेवाड़ की सीमा पर है। रूपजी 10 किमी. पूर्व रीछेड़ वाघोरे के मोड़ में है। जीलवाड़ा और रीछेड़ के बीच आमलमाल का बड़ा पर्वत 16 किमी. लम्बा है। उसके इधर केलवा और बाघोरे के आगे घाटा नामक गांव है। उसके आगे भोरडका मगरा उत्तर–दक्षिण दिशा में 16 किमी. लम्बा है। भोरड़ और मछावला के मध्य समीचा गांव उदयपुर से 54 किमी. और कुम्भलमेर से 32 किमी. के अन्तर पर है। उसके आगे मछावला का मागरा 22 किमी. लम्बा है। जिसके आसपास समीचा, मदारड़ा, बरहाडा, बरणा, गमण आदि नौ गांव बसते थे। मछावले पर वृक्षावली और जल की बहुतायत थी।[6]

उसके आगे बरवाड़ा जहां से बर और बनास नदियां निकलती हैं। आगे घासेर का पहाड़ 3 किमी. लम्बा और उसके आगे पिण्डरझांप का पर्वत है। घासेर और पिण्डरझांप के बीच झांसनवाला कोतारा 3 किमी. उससे आगे खूमण पहाड़ों के पास लोहसिंग नामक गांव उत्तर–दक्षिण 6 किमी. और उसके आगे इसवाल नामी मगरा और कड़ी नाम का गांव है। यह मगरा गिरवे के पहाड़ों से जा लगा है और उदयपुर से 16 किमी. दूर उत्तर–पश्चिम की ओर है। घाणेराव से 6 किमी. के अन्तर पर कुम्भलमेर का पर्वत 48 किमी के घेरे में सादड़ी, रणकपुर, सेवाड़ी तक चला गया है।[7]

कुंभलगढ़ दुर्ग की अनेक छोटी–मोटी पहाड़ियों के नाम श्वेत, नील, हेमकूट, निषाद, हिमवत, गन्धमदन आदि थे। सेवाड़ी गांव कुंभलगढ़ से 22 किमी. दूर है, इसके आगे राहग का मगरा बहुत विकट है, वहां जल बहुतायत में था और 25 गांव इसके आसपास बसते थे, यह पहाड़ 51 किमी. लम्बा है। वह सिरोही की सरणुआ पहाड़ियों से जा लगा है, इसका घेर 96 किमी. तथा चौड़ाई 48 किमी है। इसके निकट माल्हण, सुनाहणी, बहड़ी, पिण्डवाड़ा, भाटोही, भूणोद आदि गांव बसे थे, जहां से जूही (बेकरिया का घाटा) नदी निकलती है।[8]

जरगा और राहंग के बीच की भूमि में (देसहरो देश) आम के पेड़ है। यहां चावल, गेहूं, चना और उड़द बहुतायत में पैदा होते हैं। मछावला और जरगा के बीच की भूमि कुहाड़िया नला कहलाती है, जो 32 किमी. की लम्बाई में उदयपुर से 64 किमी. के अन्तर पर है। जरगा का पहाड़ कुहाड़िया नले से दाहिनी ओर है और दूसरी तरफ केलवाड़ा और दक्षिण में रोहेड़ा गांव है। केलवाड़े में जावर का तालाब स्थित था। जरगा पर्वत पर जल बहुतायत में था। इसके आगे 22 किमी. उसी से सम्बन्ध रखने वाली नाहेसर (नाहर) और भांडेर की अति विषम और विकट भूमि है। उदयपुर से सिरोही जाने का मार्ग है तथा कई गांव ढोल, कलोल, गोगून्दा, सिंघाड़, बोखड़ा आदि बसे हुए थे।[9]

गोगून्दा के दक्षिण में राणेराव तालाब है तथा एक बावड़ी मुगल शासक अकबर की बंधाई हुई कहते हैं, इसके पास सेरा की नदी है। महासतिया के पूर्व में महाराणा खेता काबंधवाया हुआ, खेतेला तालाब है। गोगुन्दा के दक्षिण–पश्चिम में धोलेगर पर्वत प्रसिद्ध है और उत्तर की तरफ खमाण का

पर्वत है। उसके पश्चिम की तरफ सरहद रावल्या की है। इसके उत्तर की तरफ वाले पर्वत कुंथल कहलाते है।[10] इस पहाड़ से इधर मांडेर से 13 किमी. उदयपुर की दक्षिण दिशा में बहुत से गांव थे। ठगरावड़ी, आहोर, नाहेसर, पानरवा, भाडेर, डाल. पई मथाड़ा और देवहर के पहाड़ भी बहुत बड़े हैं। इनके आगे माचण के पहाड़ 48 किमी. के घेरे में हैं। छाली, पूतली और ढोल-कलोल के पहाड़ ईडर से 22 किमी. मेवाड़ की तरफ है। छप्पन, चावण्ड और जवास व जावर के बीच उदयपुर से 55 किमी, पीपलदड़ी और सिरोड़ के पहाड़ है।[11]

बांसवाडा और देवलिया (प्रतापगढ़) के मध्य मेवाड़ (छप्पन) के गांव औरराजा का जगनेर है। यह देश मण्डल कहलाता है। बड़वाल परगने का गांव धरियावद जहां बड़े पहाड और सघन वृक्ष है। धरियावद के पश्चिम में मेवल के मगरे और सलूम्बर, बाठरड़ा, बम्बोरा गांव हैं। बाठरड़ा और सलूम्बर के बीच बड़े-बड़े पहाड़ हैं।[12] बाठरडा क्षेत्र में खानडया,बरवाला डूंगरा सहित मखरेड का पहाड़ प्रसिद्ध रहा।[13]

सलूम्बर14 नगर में सोनार माता की पहाड़ी 455 मीटर, खारवा गांव (परगना-चांस्दा) की मनियोल पहाड़ी 756.81 मीटर, गांव-आजणी जिला मगरा की पहाड़ी 57.15 मीटर इसी जिले में मटाल्या टोला 530.96 मीटर, धोलागिरी की पहाड़ी जो खण्डेला पाल की सीमाओं में है 524.5 मीटर ऊंची हैं। बाठरड़ा से 10 किमी. पश्चिम में उदयसागर स्थित है। इस तालाब से 3 किमी. देबारी, देबारी से 7 किमी. दूर आहाड़ है। उदयपुर में राणा के महल पीछोला के किनारे बने हुए हैं। उदयपुर से 16 किमी. पश्चिम की ओर सिगड़िया नाम का बड़ा पहाड़ है। आगे उदयपुर से 10 किमी. धार की पहाड़ी और उत्तर में लखावली है। उसी दिशा में चीरवे का घाटा और अंबेरी गांव हैं। चीरवा से 7 किमी. और उदयपुर से 16 किमी. पर एकलिंगजी और वहां से 3 किमी. राठासण की पहाड़ी 6 किमी. के घेरे में है. जहां जल नहीं था। एकलिंगजी से 9 किमी. देलवाड़ा और देलवाड़ा से 28 किमी. कोठारिया है. देलवाड़ा मेवाड़ के मध्य में है। कोठारिया के निकट बनास नदी बहती है। इससे 81 किमी. पूर्व में चित्तौड़, चित्तौड़ से 3 किमी. अरवण के बड़े पहाड़ हैं परन्तु उन पर जल नहीं है। मेवाड़ की प्राकृतिक विशेषता में यहां के पहाड़ों के साथ-साथ पठार भी हैं।[15]

मेवल (जगत, कुराबड़, बंबोरा आदि) बम्भोरा के सारंगदेवोत सीसोदियों की जागीर में था। देवलिया से 10 किमी. पर बड़ा मेरवाड़ा है। यहां 140 गांवों में विभिन्न शाखाओं के मेरनिवास करते थे। देवलिया और मेवल के बीच की भूमि को मण्डल देश कहते थे, जिसमें मुख्य स्थान धरियावद है। यहां का पानी रोगजनक होने से जनसंख्या नहीं बढ़ी। परगना जूड़ा उदयपुर से 80 किमी., गोगून्दा और सिरोही के परगने भीतरोट से मिला हुआ था। भांडेर का पहाड़ 32 किमी. लम्बा और 6 किमी. चौड़ा है। नाहेसर 38 किमी. लम्बा और 6 किमी. चौड़ा है, जिसमें जूड़े का परगना है। एक-एक गांव में पांच सौ सात सौ बीघा भूमि कृषि के योग्य और बची हुई भूमि पहाड़ों के तले दबी है। धान, साल, गेहूं, चना, मक्का, उड़द और बालण ककड़ी बहुतायत से पैदा होती थी। अरावली की सबसे ऊँची श्रेणी कुभलगढ़ 1087.52 मीटर है, यह गोगून्दा तक गयी है। गोगून्दा से 48 किमी. उत्तर में जरगा के पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी 1315.21 मीटर है। हिन्दुस्तान का बड़ा भाग जो बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों के बहाव को खंभात की खाड़ी (गुजरात राज्य) में जाने वाली नदियों के बहाव से अलग करता है। यह भाग राजस्थान के मध्य से गुजरता है, जो जल विभाजक रेखा कहलाती है। इस राष्ट्रीय जल विभाजक रेखा का भी अपना महत्व है। पूर्वी राजस्थान में सशक्त नदी पात्र हैं, तो पश्चिमी राजस्थान में भू-जल के विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिगत पात्रों में विशाल जल राशि उपलब्ध है। यह जल विभाजक रेखा मेवाड़ के करीब करीब बीच में से गुजरती है। जो पूर्व में बड़ी सादड़ी होती हुई उदयपुर और वहां से गोगून्दा के आसपास की ऊँची जमीन व बनास के निकासों और पश्चिम में कुंभलगढ़ के बड़े पहाड़ी किले के निकट होकर अरावली पर से अजमेर को जाती है। ईशान कोण को झुकाव साधारण परन्तु बराबर एक सा है।[16] उदयपुर नगर समुद्र की सतह से 596.49 मीटर और उत्तर-पश्चिम में देवली 341. 98 मीटर ऊँचा है। इस ऊँचे हिस्से को पार करने के पश्चात् खुले हुए ऊँचे नीचे मैदानों के स्थान दक्षिण और पश्चिम का हिस्सा चट्टानों, पहाड़ियों और घने जंगलों से ढका हुआ था। अरावली पहाड़ जो पश्चिमी किनारे पर मेरवाड़ा मेवाड़ राज्य के दक्षिण-पश्चिम व दक्षिणी हिस्सों में डूंगरपुर के किनारे पर सोम की तराई तक और दक्षिण की तरफ माही की तराई तक फैला हुआ है। यह अन्त में उन पहाड़ियों के साथ मिल जाता है, जो दक्षिण-पूर्व की ओर जाखम नदी की तराई के निकट विन्ध्याचल का हिस्सा है।

मेवाड़ के दक्षिणी भाग का सम्पूर्ण जल जयसमुद्र में रुकने के अलावा जाखम और सोम नदी में बहकर खंभात की खाड़ी में पहुंचता है, इस ओर ऊँचाई कम होती गयी है। अरावली श्रृंखला के इन पर्वतों ने पूर्व और दक्षिण की तरफ अपनी कई कम ऊँची ढालू बांहे फैला रखी हैं जिन्होंने सम्पूर्ण प्रदेश को उत्तर-पूर्व की और एक ढलते पठार का रूप दे दिया है। बनास और उसकी मुख्य धाराएं इन्हीं बाहों के बीच दूनों (अर्थात् दोनों-कठोती) से निकलकर बहती हैं। 15 वीं शताब्दी में चित्तौड़ क्षेत्र के पहाड़ मैदान के मध्य गुफाओं, झरनों तथा वनों की बहुलता को संजोये हुए थे। ये पर्वत पश्चिम में रेगिस्तान की तरफ तो मैदान से एकाएक ऊँचे उठे हुए हैं, जहां उनके ऊंचे-ऊंचे ढ़ाल अत्यन्त दुर्गम हैं।मेवाड़ के पश्चिमी हिस्से का बहाव दक्षिण की ओर है जिसमें खम्भात की खाड़ी में गिरने वाली साबरमती की सहायक नदियां हैं। पश्चिमी पहाड़ियों से दो नदियां निकलती है, पहली गोराई जो उत्तर-पश्चिम की तरफ ऐरनपुर से बढ़कर लूणी में गिरती है और दूसरी छोटी बनास जो दक्षिण-पश्चिम की ओर चलकर कच्छ के रण में गिरती है।मेवाड़ का भौगोलिक अध्न करने पर ज्ञात होता है कि इसका ढलान उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम में है। अरावली पर्वत श्रृंखला का जल दोनों तरफ फैलता या बहता है। मेवाड़ प्राकृतिक दृष्टिकोण से इस प्रकार दो हिस्सों में बंटा हुआ है।

राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (1979)''.....Existence of elevated plateau characterises the northern portion of the district while the eastern portion has fertile plains. The southern part of the district is mostly covered with rocks, hills and fairly dense jungles. The western portion of the district, better known as the Hilly Tracts of Mewar, is composed of Aravalli range. The Aravalli range enters Bhimtahsil of the district from Ajmer district and continues south westerly towards Kumbhalgarh and Jarga and then spreads towards the valley of Som river. There are passes in the Aravalli range, viz. DesuriNal and Sadri pass which cross into Jodhpur Division. The slopes are covered with forest, stones and jungles affording shelter to big game. The scenery is picturesque.....The average height of the district is 500 metres above sea level gradually increasing

towards west....."[17]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. भट्ट राजेन्द्र शंकर,मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर,पृ.40-42 पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1997ई. ; दीपा कँवर राणावत,हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत,उदयपुर एवं जोधपुर जिलों में मानव संसाधन विकास और भौगोलिक पक्ष (20वीं-21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में)पृ.41 मेवाड़ श्री प्रकाशन,चित्तौड़गढ़ एवं नई दिल्ली, 2022ई.
2. अग्रवालबी.डी.,राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर, राजस्थान, उदयपुर), 1-2 Directorate of District Gazettors Government of Rajasthan,Jaipur,1979
3. गुप्ता डॉ. मोहनलाल, उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 2 (भूमिका),राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर
4. जिला सांख्यिकी रुपरेखा, जिला उदयपुर (2006), पृ. 1,आर्थिकी एवं सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान,जयपुर
5. गुप्ता डॉ. मोहनलाल, उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 1,राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
6. सं. राणावत डॉ. मनोहर सिंह, मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग-1 पृ. 5 ; सं. ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, अनु.दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम खंड, पृ.41,राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर,2016
7. सं. ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, अनु.दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम खंड, पृ. 41; लोहसिग(लोसिंग) उदयपुर से उत्तर दिशा में 28 किमी. दूर स्थित है।
8. राणावत ईश्वरसिंह, राजस्थान के जल संसाधन, पृ. 8 चिराग प्रकाशन, उदयपुर
9. राणावत ईश्वरसिंह, राजस्थान के जल संसाधन, पृ. 42
10. सं. भाटी हुकमसिंह, गोगुन्दा की ख्यात, पृ.80-82
11. सं. ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, अनु.दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम खंड, पृ. 42,राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर
12. सं. राणावत मनोहर सिंह,मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग-1, पृ.7
13. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत,बाठेड़ा(मेवाड़)के सारंगदेवोतों का राजनीतिक इतिहास,पृ.33,मेवाड़ श्री प्रकाशन चित्तौड़गढ़ एवं नई दिल्ली,2021ई.
14. भंडारी विमला,सलुम्बर का इतिहास,पृ.5,43
15. जे.के.ओझा,मेवाड़ के पुरातात्विक स्मारक,पृ,16-17,राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर,2019 ; सं.ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, अनु.दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम खंड, पृ. 42-43 ; दीपा कँवर राणावत,हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत,उदयपुर एवं जोधपुर जिलों में मानव संसाधन विकास और भौगोलिक पक्ष (20वीं-21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में)पृ.41
16. राणावत ईश्वरसिंह, राजस्थान के जल संसाधन, पृ. 42 य जे.के.ओझा, मेवाड़ के पुरातात्विक स्मारक,पृ,16-17,राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर,2019 ; सं.ओझा गौरीशंकर हीराचन्द, अनु.दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम खंड, पृ.43 ; दीपा कँवर राणावत,हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत,उदयपुर एवं जोधपुर जिलों में मानव संसाधन विकास और भौगोलिक पक्ष (20वीं-21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में)पृ.68-69
17. Agarawal, B.D., Rajasthan District Gazetteers, Udaipur (Gazetteer of India Rajasthan, Udaipur), P. 6

****